United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

हिंदी साहित्य में ज्ञान-परंपरा

डॉ. वेड़गि सरोजिनी
अतिथि आचार्य, हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखपट्टणम्,मोबाइल

भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा उसकी ज्ञान-परंपरा में निहित है। यह ज्ञान-परंपरा केवल ग्रंथों में संचित बौद्धिक सामग्री नहीं, बल्कि लोकजीवन, आस्था, संस्कृति, दर्शन, इतिहास और सामाजिक व्यवहार में रची-बसी जीवंत परंपरा है। हिंदी साहित्य इस ज्ञान-धारा का सशक्त संवाहक रहा है, जिसने आदिकाल से लेकर आधुनिक युग तक आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैज्ञानिक और मानवतावादी चिंतन को सुरक्षित रखने, विकसित करने और जनसाधारण तक पहुँचाने का कार्य किया। प्रस्तुत शोध-निबंध में हिंदी साहित्य की विभिन्न काल-यात्राओं के माध्यम से ज्ञान-परंपरा के विकास, स्वरूप और सामाजिक उपयोगिता का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : हिंदी साहित्य, ज्ञान-परंपरा, भक्ति-आंदोलन, आधुनिकता, लोकचेतना, सांस्कृतिक विमर्श

भारतीय संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी समृद्ध ज्ञान-परंपरा है, जो केवल पुस्तकों में संचित नहीं रही, बल्कि लोकजीवन, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास और सामाजिक व्यवहार में गहरे रूप में रची-बसी दिखाई देती है। हिंदी साहित्य इस ज्ञान-धारा का स्वाभाविक वाहक है, जिसने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक और मानवतावादी ज्ञान को न केवल सुरक्षित रखा, बल्कि समय-समय पर नए स्वरूप में प्रस्तुत कर समाज को उचित दिशा भी दी है। हिंदी साहित्य की व्यापक यात्रा को समझने पर स्पष्ट होता है कि उसके केंद्र में ज्ञान-परंपरा ही आधार रही है, चाहे भक्ति कवियों की शिक्षाएँ हों, रीतिकालीन कवियों की सौंदर्य-बोध आधारित अनुभूतियाँ हों या आधुनिक लेखकों का राष्ट्रवाद और समाज-सुधार से प्रेरित चिंतन। ज्ञान-परंपरा का अर्थ केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि अनुभूतियों, अनुभवों, मूल्यों और सत्य के प्रति मनुष्य की समझ विकसित करना है तथा इन अनुभवों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित करने की प्रक्रिया भी इसी परंपरा का अभिन्न हिस्सा बनती है। हिंदी साहित्य ने ज्ञान को सदैव मानव-कल्याण, सामाजिक उत्थान और सांस्कृतिक विकास से जोड़े रखा।

हिंदी साहित्य के आदिकाल में लोकभाषाओं का विकास, वीरगाथाओं और धार्मिक आख्यानों का वर्णन मिलता है, जिनमें वीरता, धर्म-निष्ठा, संघर्ष और लोकानुभव का ज्ञान समाहित था। यह साहित्य पौराणिक और वीरगाथा प्रधान होने पर भी जीवन-मूल्यों की गहरी शिक्षा देता था और इसी काल में उन लोकभाषाओं की नींव पड़ी, जिनसे आगे चलकर ज्ञान का व्यापक प्रसार संभव हुआ।

हिंदी साहित्य के आदिकाल में लोकभाषाओं के माध्यम से वीरगाथाओं और धार्मिक आख्यानों का सृजन हुआ। इस काल की प्रमुख कृति पृथ्वीराज रासो में वीरता, स्वाभिमान और धर्मनिष्ठा का ज्ञान निहित है। इसी प्रकार चंदबरदाई जैसे कवियों ने ऐतिहासिक चेतना और राष्ट्रीय गौरव को साहित्य में प्रतिष्ठित किया। यह साहित्य पौराणिकता और शौर्यप्रधान होने पर भी जीवन-मूल्यों की शिक्षा देता था। लोकभाषाओं की स्थापना ने ज्ञान को जनसामान्य तक पहुँचाने की नींव रखी।

भक्ति-काल हिंदी साहित्य में ज्ञान-परंपरा का सर्वाधिक उज्ज्वल अध्याय है, जिसमें निर्गुण और सगुण दोनों धाराओं के कवियों ने आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक ज्ञान को अत्यंत सरल भाषा में व्यक्त किया। इस काल में सामाजिक कुरीतियों, जातिभेद, अंधविश्वास और आडंबर के विरुद्ध आवाज उठाई गई तथा मानवता, प्रेम, करुणा और आध्यात्मिक मुक्ति के संदेश को लोकभाषा के माध्यम से जनसाधारण तक पहुँचाया गया। इसी कारण इसे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण भी कहा जाता है, क्योंकि पहली बार उच्च आध्यात्मिक विचार सरल रूप में आम जनता तक पहुँचे।

भक्ति-काल हिंदी साहित्य में ज्ञान-परंपरा का स्वर्णिम अध्याय है। इस युग में निर्गुण और सगुण दोनों धाराओं ने सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना का प्रसार किया। निर्गुण संतों में कबीर ने जातिभेद, अंधविश्वास और आडंबर का विरोध करते हुए सरल भाषा में सत्य और प्रेम का संदेश दिया। उनके दोहे आज भी सामाजिक विवेक को जाग्रत करते हैं। इसी प्रकार रैदास और दादूदयाल ने मानव-एकता और समानता का संदेश दिया। सगुण धारा में तुलसीदास की रामचरितमानस ने धर्म, नीति और आदर्श जीवन का मार्ग प्रस्तुत किया। सूरदास और मीराबाई ने भक्ति को प्रेम और आत्मसमर्पण का रूप दिया। भक्ति-आंदोलन ने पहली बार उच्च आध्यात्मिक विचारों को लोकभाषा में व्यक्त कर ज्ञान का लोकतंत्रीकरण किया।

रीतिकाल को सामान्यतः श्रृंगार-प्रधान माना जाता है, पर वास्तव में इस काल में मनोवैज्ञानिक, काव्यशास्त्रीय और सौंदर्य-बोध से संबंधित नए ज्ञान की स्थापना हुई।

रीतिकालीन कवियों ने मनोभावों का सूक्ष्म विश्लेषण किया, रस, अलंकार, छंद और काव्य-शास्त्र को वैज्ञानिक रूप में व्यवस्थित किया तथा नारी-स्वभाव, सामाजिक संरचना और कलात्मकता के गहन पक्षों को समझाया। इस प्रकार इस युग ने ज्ञान को भावानुभूति, विश्लेषण और सौंदर्य-अनुभूति से जोड़कर प्रस्तुत किया।

रीतिकाल को प्रायः श्रृंगारप्रधान कहा जाता है, परंतु इस काल में काव्यशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक ज्ञान का विकास हुआ। केशवदास की रसिकप्रिया और बिहारी की बिहारी सतसई में रस, अलंकार और नायिका-भेद का सूक्ष्म विश्लेषण मिलता है। इस काल ने काव्य को शास्त्रीय आधार दिया और सौंदर्य-बोध को ज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित किया।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य ने ज्ञान की नई परिभाषा गढ़ी, जिसमें साहित्य समाज-सुधार और परिवर्तन का उपकरण बनकर उभरा। इस युग में राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता-आंदोलन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, नारी-मुक्ति, श्रमिक-वर्ग की पीड़ा और सामाजिक समानता जैसे विषयों पर साहित्यिक रचनाएँ सामने आईं। कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध के माध्यम से आधुनिक जीवन की जटिलताओं, यथार्थ और संघर्षों का चित्रण हुआ और साहित्य सामाजिक तथा राजनीतिक जागरण का प्रमुख साधन बन गया।

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य सामाजिक जागरण और राष्ट्रवाद का माध्यम बना। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी को आधुनिक चेतना से जोड़ा। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य को समाज-सुधार की दिशा दी। कहानी और उपन्यास विधा में मुंशी प्रेमचंद ने किसान, मजदूर और स्त्री की समस्याओं को चित्रित किया। उनकी कृति गोदान सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक दस्तावेज है। कविता में रामधारी सिंह दिनकर ने राष्ट्रीय चेतना और वीर रस को नई ऊँचाई दी। छायावाद के कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा ने आत्मानुभूति, मानवता और सौंदर्य का गहन विश्लेषण किया। आधुनिक साहित्य में स्त्रीवाद, अस्तित्ववाद, वैज्ञानिक दृष्टि और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना हुई।

हिंदी साहित्य की ज्ञान-परंपरा की विशेषताएँ अत्यंत व्यापक हैं। इसमें आध्यात्मिक और दार्शनिक ज्ञान मिलता है, जहाँ साहित्य आत्मा, मोक्ष, प्रेम, भक्ति, कर्म और लोकमंगल जैसे विषयों का गहन विवेचन करता है। सामाजिक ज्ञान के रूप में साहित्य समाज की संरचना, संस्कृति, अंधविश्वास, जाति-व्यवस्था, स्त्री-स्थिति, गरीबी और शोषण पर स्पष्ट टिप्पणियाँ प्रस्तुत करता है। लोकज्ञान के रूप में लोकगीत, कहावतें, कहानियाँ और मुहावरे ग्रामीण जीवन और अनुभवों को सरल रूप में व्यक्त करते हैं। मनोवैज्ञानिक ज्ञान मनुष्य की भावनाओं, संघर्षों और

इच्छाओं को समझने में सहायता करता है। आधुनिक काल में वैज्ञानिक दृष्टि और तर्कपरकता को महत्व दिया गया, जिससे साहित्य यथार्थवादी और विवेकपूर्ण बना। साहित्य नैतिक और मानवतावादी आदर्शों सहानुभूति, त्याग, प्रेम, क्षमा और न्याय को भी प्रोत्साहित करता है। साथ ही, सौंदर्य-ज्ञान के माध्यम से साहित्य कला, प्रकृति और अनुभवों के सूक्ष्म सौंदर्य को समझने की क्षमता विकसित करता है। संत साहित्य की ज्ञान-परंपरा जीवन के मूल प्रश्नों मनुष्य कैसे जिए और समाज कैसा होना चाहिए का अत्यंत सरल उत्तर देती है। सूफी साहित्य प्रेम, करुणा और मानव-एकता को ज्ञान का सर्वोच्च रूप मानता है। ब्रज और अवधी साहित्य में भक्ति, नैतिकता, प्रेम और मानव-संबंधों की व्याख्या सुंदर काव्य में मिलती है। आधुनिक साहित्य में सामाजिक यथार्थ, वैज्ञानिक दृष्टि, आर्थिक असमानता, लोकतांत्रिक मूल्य, स्त्रीवाद और अस्तित्ववाद जैसे ज्ञान की नई दिशाएँ प्रकट होती हैं।

हिंदी साहित्य ने ज्ञान को कभी सीमित वर्ग तक नहीं रहने दिया। दोहों, भजनों, लोकगीतों, नाटकों, कहानियों, पत्र-पत्रिकाओं और आधुनिक मीडिया के माध्यम से ज्ञान सामान्य जनता तक पहुँचा और शिक्षा, जागरूकता तथा विचार-क्रांति में साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी की भाषा-परंपरा जिसमें सरलता, सहजता, लयात्मकता और मधुरता है ने ज्ञान के प्रचार को अधिक प्रभावी बनाया, और विविध बोलियों ने इसे और व्यापक बनाया।

आधुनिक युग में तकनीक, विज्ञान, वैश्वीकरण और जीवन-शैली में बदलाव के कारण हिंदी साहित्य की ज्ञान-परंपरा में साइबर जीवन, पर्यावरण संरक्षण, वैश्विक राजनीति, आर्थिक चुनौतियाँ, लैंगिक समानता, मानव अधिकार, संवैधानिक मूल्य और मनोवैज्ञानिक तनाव जैसे नए विषय शामिल हो रहे हैं। इस प्रकार साहित्य सामाजिक-वैज्ञानिक विश्लेषण का भी महत्त्वपूर्ण स्रोत बन गया है।

हिंदी साहित्य की ज्ञान-परंपरा अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह व्यक्ति में विचारशक्ति, संवेदना और विवेक विकसित करती है, उसे सहिष्णु, शांत, उदार और मानवतावादी बनाती है, तथा समाज में समानता, न्याय और नैतिकता को बढ़ावा देती है। यह हमारी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखती है और जीवन को अर्थपूर्ण बनाने की दिशा प्रदान करती है। हिंदी साहित्य की ज्ञान-परंपरा सदियों के अनुभव, चिंतन और सृजन का परिणाम है, जो समाज की आत्मा में गहराई से रची-बसी है। इसमें आध्यात्मिकता, मानवता, सामाजिक सुधार, सौंदर्य-बोध, लोकजीवन, वैज्ञानिक दृष्टि और नैतिक मूल्यों का सुंदर समन्वय मिलता है। हिंदी साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि मनुष्य को मानवीय बनाना, समाज को सजग करना और जीवन को दिशा देना है। यही कारण है कि यह ज्ञान-परंपरा आज भी उतनी ही प्रासंगिक है

जितनी प्राचीन काल में थी, और हिंदी साहित्य एक जीवित ज्ञान-संपदा के रूप में निरंतर नई पीढ़ी को चेतना प्रदान करता रहता है।

सहायक ग्रंथ सूची :

आचार्य रामचंद्र शुक्ल - हिंदी साहित्य का इतिहास
द्विवेदी, हजारीप्रसाद - हिंदी साहित्य की भूमिका
नामवर सिंह - आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ